आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2442 • उदयपुर, मंगलवार 31 अगस्त, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

दिव्यांगों एवं साधकों संग मनाया रक्षाबंधन

रक्षाबंधन पर्व पर नारायण सेवा संस्थान में साधकों और दिव्यांगों को गणेश प्रतिमा, तिलक, चावल, राखी और चॉकलेट भेंट की गई। वहीं दूसरी ओर विभिन्न राज्यों से आए हुए दिव्यांग बहनों और उनके परिजनों ने संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल को रक्षासूत्र बांधा। उन्होंने दिव्यांगों को शीघ्र स्वस्थ होने की शुभकामनाएं देने के साथ इलाज में हर तरह की मदद का भरोसा दिलाया।

संस्थान द्वारा रतलाम में राशन सेवा

नर को नारायण का स्वरूप मानते हुए असहाय दिव्यांग, मूक– बधिर एवं कोरोना महामारी के चलते बेरोजगार हुए व्यक्तियों को नारायण सेवा द्वारा रतलाम में 40 निर्धन परिवारों को निःशुल्क राशन किट वितरित किए गये। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री मंगल जी लोढ़ा (पार्षद), अध्यक्ष श्रीमान विकास जी, विशिष्ट अतिथि श्रीमान् ब्रजेश जी कुशवाह, श्री मंगलसिह जी श्री मान विरेन्द्र जी शक्तावत, श्री मान प. हितेश जी, श्री भरत जी पोरवाल, श्री नरेन्द्र सिंह जी पधारे।

शिविर प्रभारी श्री मुकेश जी शर्मा ने बताया कि ऐसे जरूरतमंदों के लिए नारायण गरीब परिवार राशन योजना के माध्यम से 50 हजार परिवारों तक राशन पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया है इसी क्रम में रतलाम में राशन वितरण शिविर आयोजित किया गया। प्रत्येक किट में 15 किलो आटा, 2 किलो दाल, 5 किलों चावल, 2 किलो तेल, 4 किलो चीनी, 1 किलो नमक एवं मसाले प्रदान किए गए।

दीपक के जीवन में उजाला

घर में पहली संतान हुई, हर्ष का वातावरण था। किन्तु वह स्थायी नहीं रह पाया। बच्चे ने जन्म तो लिया, लेकिन शारीरिक वि.ति के साथ। बाएं पांव में घुटने के नीचे वाले हिस्से में हड्डी थी ही नहीं। पांव मात्र मांस का लोथड़ा था।

राजस्थान के राजसमंद जिले की खमनोर तहसील के मचींद गांव निवासी किशनलाल की पत्नी राधाबाई ने उदयपुर के बड़े सरकारी अस्पताल में 2014 में पुत्र को जन्म दिया। डॉक्टरों ने शिशु की उक्त स्थिति को देखते हुए घुटने तक बायां पांव काटना जरूरी समझा। उन्होंने माता–पिता को बताया कि यदि ऐसा नहीं किया गया तो बच्चे के शरीर में संक्रमण फैल सकता है।

माता–पिता ने दुःखी मन से जन्म के तीसरे ही दिन बच्चे का पांव काटने की स्वीृति दी। मजदूरी करके परिवार चलाने वाले किशनलाल ने बताया कि करीब 2 माह बाद पांव का घाव सूखा और वे बच्चे को घर ले आए।

पिछले सात साल बच्चे की दिव्यांगता को देखते हुए किस तरह काटे और कैसी पीड़ा झेली इसका वे शब्दों में बयां नहीं कर सकते। ज्यों–ज्यों बच्चा बड़ा होता गया उसका दुःख भी बड़ा होता गया। सन् 2020 में उन्होंने नारायण सेवा संस्थान का निःशुल्क कृत्रिम अंग लगाने का टी.वी. पर कार्यक्रम देखा था। जो उन्हें उम्मीद की एक किरण जैसा लगा।

संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने बताया कि दीपक को लेकर उसके परिजन संस्थान में आए थे। तब कृत्रिम पैर लगाया गया। उम्र के साथ लम्बाई बढ़ने पर कृत्रिम पांव थोड़ा छोटा पड़ गया। जिसे बदलवाने हेतु शुक्रवार को दीपक अपने मामा के साथ आया। उसे कृत्रिम अंग निर्माण शाखा प्रभारी डॉ. मानस रंजन साहू ने उसके नाप का कृत्रिम पांव बनाकर पहनाया। वह अब खड़ा होकर चल सकता है।

संस्थान द्वारा हैदराबाद (तेलंगाना) में राशन वितरण

नारायण सेवा संस्थान यों तो दिव्यांगता मुक्ति अभियान में प्रमुख रूप से सेवारत है किंतु कोरोना काल में जरूरतमंदों के लिये विविध प्रकार की सेवा में अग्रणी रहा है। आप सभी के आशीर्वाद से देशभर के करीब 50 हजार परिवारों को राशन–सामग्री प्रदान करने का सौभाग्य पाया है। यह प्रक्रिया अनवरत जारी है।

ऐसा ही एक राशन वितरण शिविर नारायण गरीब परिवार राशन–योजना के अंतर्गत नारायण सेवा संस्थान आश्रम लीलावती भवन इस्लामिया बाजार कोटी हैदराबाद में 08 अगस्त 2021 को आयोजित किया गया। नारायण सेवा संस्थान की इस शाखा द्वारा कुल 55 परिवारों को राशन–किट प्रदान किये गये।

शिविर प्रभारी श्री महेन्द्र सिंह जी के अनुसार इस कार्यक्रम में जो अतिथिगण पधारे उनके शुभनाम निम्नलिखित हैं–मुख्य अतिथि श्री गोविन्द जी राठी (मंत्री राजस्थानी प्रगति समाज एवं महेश बैंक निदेशक), अध्यक्ष तरुण जी मेहता (हैदराबाद सिकन्दराबाद गुजराती ब्राह्मण समाज अध्यक्ष), विशिष्ट अतिथि श्री ए.के. वाजपेयी (पूर्व पुलिस अधिकारी), श्री प्रघा गुगलिया जी जैन (जैन रत्न श्राविका मण्डल), श्री अभय जी चौधरी(समाजसेवी), श्री रिद्धिश जी जागीरदार (प्राणी मित्र, रमेश जागीदार फाउण्डेशन), श्री आर. के. जैन (भारत हिन्दू महासभा अध्यक्ष, तेलंगाना), श्रीमती अलका जी चौधरी (शाखा संयोजक)। शिविर टीम में जयप्रकाश जी एवं श्री अरुणा संध्यारानी जी का राशन वितरण में योगदान रहा, शिविर के लाभार्थी जन अत्यंत प्रसन्न थे।

समृद्धि के पापा की जुबानी

नाम–समृद्धि गुप्ता उम्र– 2 वर्ष
निवास – छितोनी बाजार
जिला– कुशीनगर
राज्य– उत्तर प्रदेश

समृद्धि के पापा एक छोटी दूकान चलाते हैं। उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। वे दूकान से मालूसी कमाते है। इसके पैदा होते ही समृद्धि दिमाग में रोग हो गया जिसके कारण पापा बहुत परेशान रहते थे। दिमाग के परेशानी की वजह से इसका पैर सही से काम नहीं करता है। यह चल नही पा रही थी।

एक प्राइवेट होस्पिटल में दिखाया पर ठीक नहीं हो पाई थी। पापा लोगों के बताऐ हुए जगह पर ले जाते थे फिर भी पैरो में कुछ भी लाभ नहीं हुआ। पापा मन से हार–चुके थे। पापा और मम्मी ने सोचा अभी मेरी बच्ची कभी नहीं चल पायेगी।

घर के बगल के एक अंकल हैं जिन्होने पापा को संस्थान के बारे में बताया। तो पापा मन में एक आशा की ज्योति जली कि नारायण सेवा संस्थान जाने मे मेरी बेटी ठीक हो सकती है। 31.12.2019 को पापा और मम्मी साथ मे उदयपुर सीटी स्टेशन के लिए निकल पड़े। स्टेशन से निकलते ही नारायण सेवा संस्थान की बस लगी भी जिससे नारायण सेवा संस्थान में पहुँचे।

नारायण सेवा संस्थान में पहुचते ही रजिस्टेशन करवा कर मुझे भर्ती किया गया। वहाँ पर रोगियों को ठीक हो कर जाते हुए देखा तो पापा के मन में विश्वास हो गया। कि मेरी बेटी भी ठीक हो जायेगी। यहाँ पर खाने–पीने का अच्छी व्यवस्था थी। ऑपरेशन का दिनांक का ज्यादा दिन तक इन्तजार नहीं करना पड़ा। और दिनांक 3.1. 2020 को मेरी बेटी का ऑपरेशन हुआ। उसके बाद मेरी बेटी पहले से बहुत ठीक है। और मेरी बेटी अब तक चल पायेगी। हम दोनो मिलकर नारायण सेवा संस्थान को बहुत–बहुत धन्यवाद करना चाहेगे जो मेरे जैसे लोगों को नि:शुल्क सारी सुविधा दी जो मैं चाहूंगा कि और भी रोगियो का सहायता मिले और सब रोगी खुश हो ये ही मेरी दुआ होगी मैं नारायण सेवा संस्थान को बहुत– बहुत आभारी हूँ।

राजमल जी भाईसाहब का कहना था सेवा में मातृ भाव हो

एक बार उन्होंने कहा सेवा करने वालों में मातृत्व भाव होना चाहिए, पितृत्व भाव नहीं। यदि कोई पुत्र दुर्दैव से शराबी, जुआरी या अपचारी बन जाता है तो उसकी सर्वाधिक चिंता मां को ही होती है। वह उसे सुधारने के लिए हर संभव प्रयत्न करती है। पिता का प्यार तो होनहार और कमाऊ और नामी बच्चों पर ज्यादा रहता है, पर मां अपने कमजोर बच्चों के लिए मरते दम तक चिंतित रहती है। ऐसे ही समाज सेवी को सबसे कमजोर व पंक्ति में अंतिम छोर पर खड़े सेवा जरूरती व जरूरतमंद पर अधिक ध्यान देना चाहिए तभी सेवा कार्य की सफलता सुनिश्चित हो सकती है।

सेवा में जब मातृत्व भाव आता है तो दूसरों के लिए किए गए कार्य भलाई या परोपकार की श्रेणी से निकलकर कर्तव्य के रूप में सामने आ जाते हैं। भाई साहब से पूछा की सेवा का फल क्या है ? क्यों दूसरों के लिए ऐसा सेवा कार्य करें तो वह अपने चिर परिचित अंदाज में उत्तर देते– देखो राजस्थान से हजारों लोग थोड़ी बहुत काम चलाओ पढ़ाई करके मुंबई, चेन्नई, बेंगलुरु, कोलकाता जैसे महानगरों या उनके उप नगरों में जाते हैं । वह न तो बलशाली होते हैं और नहीं धनशाली किंतु उनमें मातृत्व का भाव होता है। वह सहनशील स्वभाव के कारण वहां अपना स्थान बना लेते हैं। इस भाव के कारण उनकी करुणा उन्हें धनशालीव संस्कारी बना देती है। सेवा का फल उन्हें प्रत्यक्ष मिल जाता है। वह धन कमाकर वहां भी लगाते हैं और अपनी जन्मभूमि पर भी लगाते हैं।

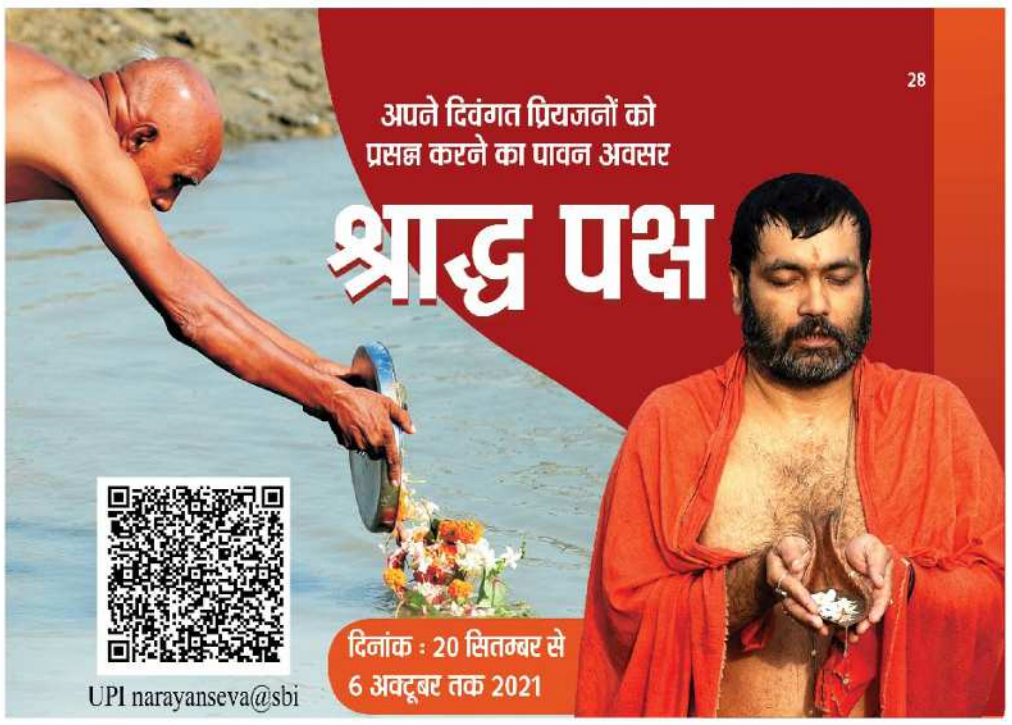

सम्पादकीय

कहा जाता है कि जिसका स्वयं पर शासन होता है वही अनुशासन का पालन कर सकता है। यहाँ यह समझना आवश्यक है कि स्वयं पर शासन का अर्थ क्या है ? स्व–शासन यानी अपनी भावनाओं पर नियंत्रण। व्यक्ति एक विचारक प्राणी होने के कारण उसके मन में प्रति पल अनेक विचारों का आवागमन होता रहता है। वे विचार क्रियान्वित हों, यह भी व्यक्ति की कामना रहती है। लेकिन एक विचारवान व्यक्ति होने के कारण वह सोचता है कि इस कार्य की क्या उपादेयता है ? इस कार्य से किसे लाभ या हानि होगी ? इस कार्य के क्या सुपरिणाम या दुष्परिणाम होंगे ? जो इस प्रकार का चिंतन करता है वह क्या उचित है, वह करेगा। यही स्वयं पर शासन है। जब व्यक्ति स्वयं पर शासन या नियंत्रण करने में समर्थ हो जाता है तो वह स्व–अनुशासित भी स्वतः हो जाता है। आज चारों ओर नियमों व व्यवस्थाओं की धज्जियां उड़ती दिखाई देती है, इसका मूल कारण है व्यक्ति का स्वयं पर नियंत्रण या अनुशासन नहीं होना। स्वानुशासन के लिये वातावरण भी चाहिये और वैचारिक पृष्ठभूमि भी। ये दोनों बातें हमारे ही हाथ में है।

कुछ काव्यमय

सेवा की देवगंगा

जो सेवा में लीन है,
उसे होने दो।
अपना तन, मन उसे
इस देवगंगा में भिगोने दो।
यदि बन सको तो
बनो उसके सहयोगी।
तभी तुम बन सकोगे,
वैचारिक नीरोगी।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

ईर्ष्या से होता है पुण्य क्षय

विंध्याचल पर्वत के एक छोटे से गाँव गंजीपुर में कुछ साधु घूमते हुए पहुँचे। पहाड़ी इलाका था। उबड़–खाबड़ रास्ते में चलने के कारण एक साधु के घुटने में दर्द हो गया। उन्हें चलने में कठिनाई होने लगी। गंजीपुरा में साधु के लिए गेड़िये की खोज शुरू हुई। गाँव छोटा था। केवल एक बुढ़िया के पास ही गेड़िया मिला। लोगों द्वारा समझाने पर बुढ़िया ने साधु को अपना गेड़िया दान कर दिया।

कुछ दिनों के बाद बुढ़िया का अंतिम समय आया। मृत्यु शय्या पर पड़े–पड़े उसने देखा कि दो देवदूत न जाने कहाँ से आए और उन्होंने बुढ़िया से चलने के लिए कहा।

बुढ़िया बोली –कहाँ चलना है?

'स्वर्ग में।' देवदूतों ने उत्तर दिया।

बुढ़िया बोली – मैंने धर्म–पुण्य तो कुछ किया नहीं, फिर स्वर्ग कैसे मिल रहा है ?

देवदूत बोला – बुढ़िया, याद कर ! एक बार तूने एक साधु के लिए गेड़िया का दान दिया था।

बुढ़िया बोली – हाँ–हाँ, दिया था। उस बात को तो काफी समय बीत गया।

देवदूत बोला – उसी दान का शुभ फल तुझे भोगना है, इसीलिए हम आये हैं। स्वर्ग में चल, धर्मराज का आदेश है !

बुढ़िया बोली – स्वर्ग में मैं कैसे जाऊँगी ? विमान तो तुम लाये नहीं।

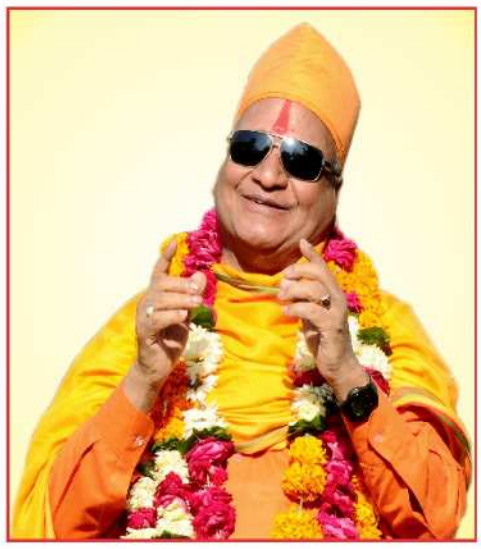

देवदूत बोला – बुढ़िया ! इतना पुण्य, तुने नहीं किया कि तेरे लिए विमान लाया जाता हाँ, तू हमारे इस गेड़िए का छोर पकड़ ले। अभी उड़कर चलते हैं। स्वर्ग में पहुँचने के बाद तो आनन्द ही आनन्द है।

बुढ़िया के पड़ोस में एक बुढ़िया और रहती थी। वह अत्यन्त गरीब थी। उसका कोई सहारा भी नहीं था। देवदूत और बुढ़िया की बातें सुनकर उसका धैर्य विचलित हो गया। वह सीधी बुढ़िया के पास पहुँची। बुढ़िया को तो देवदूत गेड़िए के सहारे ऊपर उठा कर लिए जा रहे थे। दूसरी बुढ़िया ने तुरन्त उस बुढ़िया के पैर पकड़ लिए। ऊपर वाली बुढ़िया असमंजस में पड़ गयी। वह सोचने लगी। दान तो मैंने दिया और स्वर्ग में यह जा रही है। यह कैसे हो सकता है। नहीं.....नहीं, मैं इसे स्वर्ग में न ही जाने दूँगी। बुढ़िया ने नीचे वाली बुढ़िया से तुरन्त पैर छोड़ देने को कहा। नीचे वाली बुढ़िया गिड़गिड़ाकर बोली –तुम्हारे सुख में अंतर नहीं पड़ेगा, बहिन ! तेरे सहारे मेरा भी काम बन जाएगा। मैं भी स्वर्ग में पहुँच जाऊँगी।

ऊपर वाली बुढ़िया ने उसकी प्रार्थना नहीं सुनी ! उसने उसे खूब दुत्कारा ! वह अपना पैर छुड़ाने की कोशिश करने लगी। उनकी रस्साकसी में बुढ़िया के हाथ से गेड़िए का छोर छूट गया। वह धड़ाम से नीचे आ गिरी। साथ में बेचारी पड़ोसी बुढ़िया भी गिर गई। नीचे गिरकर ज्योंही वह खड़ी हुई, उसे सामने यमदूत दिखाई दिया। बुढ़िया बोली – तुम यहाँ कैसे ?

यमदूत बोला –तुम्हें लेने आया हूँ।

बुढ़िया बोली –मैंने तो दान दिया है अतः मैं तो स्वर्ग में जाऊँगी। मुझे तो देवदूत लेने आएँगे। नरक में तो इस निगौड़ी को ले जाओ। यह जाएगी तुम्हारे साथ। मुझे तो तुम भूल से लेने आ गये हो।

यमदूत बोला –इसको क्यों ? मैं तो तुमको ही ले जाऊँगा। तुमने जो पुण्य कमाया था, उसे तो तुम ईर्ष्या करके समाप्त कर चुकी हो। अब तो तुम्हारे लिए नरक ही नरक है।

और दूसरे ही क्षण यमदूत ने बुढ़िया को नरक में पहुँचा दिया। याद रखें, ईर्ष्या व द्वेष ऐसे दुर्गुण हैं जो धर्म–पुण्य के प्रभाव को समाप्त कर देते हैं।

खामोश चेहरे पर हजारों पहरे होते हैं।
हँसती आँखों में भी जख्म गहरे होते हैं।
जिनसे अक्सर रूठ जाते हैं हम,
असल में उनसे ही रिश्ते गहरे होते हैं।

–कैलाश 'मानव'

दयालु संत

एक संत थे। वे जीवन भर निःस्वार्थ भाव से लोगों की सेवा करते रहे। एक बार देवताओं का एक समूह उनकी कुटिया के समीप से निकला। संत साधनारत् थे। वे साधना से उठे और बड़े ही श्रद्धाभाव से उनकी सेवा की। देवतागण संत की सेवा से अत्यंत प्रसन्न हुए। देवताओं ने संत से कहा

–आपके लोकहितार्थ किए गए कार्यों से हम सभी बहुत प्रसन्न हैं, आप जो चाहें, वह वरदान माँग लें।

देवताओं की बात सुनकर संत विस्मित से हो गए और कहने लगे–मेरी जरूरत की सभी व्यवस्थाएँ तो हैं। अब और क्या माँगू? मुझे तो कुछ भी नहीं चाहिए।

देवताओं ने आग्रह किया, तो भी संत ने कुछ भी माँगने से मना कर दिया, तब देवताओं ने आशीर्वाद दिया और कहा –सदैव दूसरों का कल्याण करते रहो।

संत –यह दुष्कर कार्य मुझसे नहीं हो पाएगा?

देवता–क्यों? चह कोई दुष्कर कार्य नहीं है।

संत–मैंने कभी किसी को दूसरा माना ही नहीं। मैंने तो सभी को अपना माना है। इसीलिए यह मेरे लिए दुष्कर कार्य है।

संत की बात सुनकर देवता अत्यंत प्रसन्न हो गए। उन्होंने संत से कहा – आपकी तो परछाई से भी सबका कल्याण होगा।

यह बात भी संत ने एक शर्त पर स्वीकार की। उन्होंने देवताओं से कहा– मेरी परछाई से किसी का भी कल्याण हो, परंतु उस बात का मुझे कभी भी पता ना चले।

ऐसी व्यवस्था सदैव रखना ताकि मुझमें कभी यह अहंकार ना हो कि मेरे द्वारा इतने लोगों का भला हो चुका है।

संत की बात सुनकर देवता अत्यंत प्रसन्न हो गए। उन्होंने संत को आशीर्वाद दिया और वहाँ से चले गए।

दुनिया में आज ऐसे ही संतों की जरूरत है, जिनमें पर–कल्याण की भावना के साथ निस्वार्थता और विनम्रता के गुण भरे हों।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

इतने बढ़िया कपड़ों की दो बोरियां मिल जाने पर कैलाश अत्यन्त उत्साहित था। बीसलपुर में तो सभी ने मिल कर बोरियां बस पर चढ़वा दी थी, बाली में बस बदलनी थी। यहां बोरियां बस से उतार कर वापस उदयपुर की बस में चढ़ानी थी। कोई हमाल या मजदूर नजर नहीं आ रहा था। बस से उतारने का काम तो आसान था, कैलाश ने खुद ही बस की छत पर चढ़ कर बोरियां नीचे पटक दी, कपड़े थे इसलिये किसी तरह की टूट फूट का खतरा भी नहीं था। उसली कठिनाई वापस इन बोरियों को उदयपुर की बस में चढ़ाने की थी। उसने इधर–उधर देखा, बस कन्डक्टर से भी विनती की मगर कोई उसकी सहायता हेतु आगे आने को तैयार नहीं था। बड़ी मुश्किल से एक–एक करके दोनों बोरे उसी ने बस की सीढ़ी चढ़कर उपर पहुँचाए।

बोरे जब उदयपुर पहुँच गये तब प्रश्न यह खड़ा हो गया कि इन वस्त्रों का वितरण कहां और कैसे किया जाय? उदयपुर में गरीब बस्तियां तो बहुत थी मगर सिटी रेल्वे स्टेशन के पास अवस्थित झुग्गी झोंपड़ियों में रहने वालों की स्थिति सबसे दयनीय प्रकट होती थी। वस्त्र वितरण की शुरुआत इसी बस्ती से करने का निश्चय किया गया।

अंश - 98

कल्याण सिंह जी को श्रद्धांजलि

राजस्थान के पूर्व राज्यपाल महामहिम कल्याण सिंह जी के निधन पर नारायण सेवा संस्थान ने गहरा दुःख व्यक्त कर श्रद्धांजलि दी। उनके समाज कल्याण के योगदान को याद करते हुए संस्थापक पद्मश्री कैलाश 'मानव' ने कहा 'वे मानव सेवा के पुजारी थे। संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने कहा राज्यपाल सिंह संस्थान द्वारा दिसम्बर–2014 में आयोजित दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह में पधारें थे। उन्होंने पीड़ित मानवता की सेवाओं की प्रशंसा करते हुए कहा 'विश्व की महानतम भारतीय संस्कृति में ऋषि–मुनियों द्वारा प्रवर्तित जीवन पद्धति में से दूसरों के लिए जीना ही सर्वश्रेष्ठ जीवन पद्धति है।'

सांगरी की सब्जी दवाओं से ज्यादा घटाता है कोलेस्ट्रॉल

खेजड़ी की फली सांगरी से बनी सब्जी मारवाड़ में पीढ़ियों से खाई जाती रही है और देश –विदेश में भी पसंद की जाती रही है। पुरखों ने इसके औषधीय गुणों को सदियों पहले पहचान लिया था। अब वैज्ञानिक शोध में पता चला है कि सांगरी बाजार में मिलने वाली कोलेस्ट्रॉल घटाने वाली दवा स्टेटिन से कहीं अधिक असरकारक है।

हांगरी हानिप्रद एंजाइम को निष्क्रिय और कोलेस्ट्रोल कम करती है बल्कि मुक्त मूलकों को खत्म कर एजिंग प्रोसेस रोकती है। लीवर में मौजूद हाइड्रोक्सी– मेथिलग्लूटेरिल–कॉएजाइम एरिडक्टेज कोलेस्ट्रॉल के लिए जिम्मेदार है।

यौगिक घटा देते हैं कोलेस्ट्रॉल

उच्च रक्तचाप, डायबिटीज मोटापा, बढ़ती उम्र, असामान्य कॉलेस्ट्रोल बढ़ना या हार्ट अटैक की फैमली हिस्ट्री वाले रोगी के लिए सांगरी राम बाण से कम नहीं है।

कोई भी साइड इफैक्ट नहीं

बाजार में कई प्रकार की स्टेटिन दवाएं उपलब्ध हैं। स्टेटिन का अधिक उपयोग से सिरदर्द, मतली जैसी शिकायत देता हैं, जबकि सांगरी का कोई भी साइड इफैक्ट नहीं है। प्राकृतिक सब्जी है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

''संत हृदय नवनीत समाना'' हाँ महाराज अद्भुत। तो बूझड़ा ग्राम की यात्रा सुबह पहुँचे साढ़े दस बजे। बस में ऐसा हुआ कि जिस बस को कहा गया था, तय था, टकटकी लगाये देख रहे थे। छः बजे से सवा छः बजे तक। अरे! पन्द्रह मिनट लेट हो गये। बूझड़ा गाँव के लिए बस आयी नहीं। पौने सात बजे तक भी बस नहीं आयी। उसको फोन किया, मोबाइल फोन तो थे नहीं–बाबू। बड़ी मुश्किल से फोन उठाया उसने बाबू। क्या करूं साहब? मेरे को तीर्थ यात्रा पर बस भेजनी पड़ी। ये भी तो तीर्थ यात्रा है। ये भी तीर्थयात्रा है– सेवा की। आप नहीं आये? एक घण्टा टकटकी लगा कर देखते रहे। पी. एण्ड टी. के ग्राउन्ड फ्लोर पर किराये काम कान लिया था। जिनके नाम पर प्लाट था, वो आये नहीं– उन्होंने किराये दे दिया। टकटकी लगा के देख रहे हैं। क्या करें? बस तो तीर्थयात्रा पर चली गयी–रामेश्वरधाम। लोग इन्तजार करेंगे, एक सप्ताह पहले,

नन्हा–मुन्ना बालक टाबर, नंग–धड़ंगा डोले रे।
कुण तो वांका दुखड़ा देखे, कुण मुखड़ा सूं बोले रे।।

सूचना दे दी। अमुक तारीख को हम आयेंगे। 29–12–85 को आऐंगे सन्डे का दिन है। क्या जवाब देंगे बूझड़ा गांव वालों को? बस नहीं आयी। अचानक भगवान ने सद्बुद्धि दी। श्यामलाल जी कुमावत जो अन्तरिक्ष से हमें आशीर्वाद दे रहे हैं। उनके सुपुत्र प्रदीप जी कुमावत साहब जो आलोक संस्थान को भी सम्भालते हैं। रेल्वे के ऑडिट बोर्ड के अध्यक्ष हैं। अभी दिल्ली में पधारे थे। उनके पिताजी के फोन नम्बर लिये।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 225 (कैलाश 'मानव')

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह

दिनांक :11 सितम्बर, 2021 स्थान : सेवा महातीर्थ बड़ी, उदयपुर

पाणिग्रहण संस्कार (प्रति जोड़ा)
₹10,000
DONATE NOW

सीधा प्रसारण
आस्था
प्रातः 10 बजे से 1 बजे तक

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI
Google Pay PhonePe paytm
narayanseva@sbi

अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय: 483, 'सेवाधाम' सेवा नगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर (राज.) 313002, भारत
+91 294 662 2222, 266 6666 | +91 7023509999

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023